फरीदाबाद

मजदूर समाचार

मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

काम कम । बातें ज्यादा।।

नई सीरीज नम्बर 132 जून 1999

सोचना और नये तरीके जरूरी क्यों ?

मैनेजमेन्टें जो तौर-तरीके अपना रही हैं उनसे परमानेन्ट मजदूरों की स्थिति भी कैजुअल वरकरों वाली हो रही है। परमानेन्ट, कैजुअल, ठेकेदार के वरकर - सब मजदूर साँस लेते रहने की चिन्ता में मरे जा रहे हैं। जीवन सुधारने की बातें तो सपने में भी नहीं आती , जैसे हैं वैसे बने रहने में ही पसीने-पसीने हो रहे हैं।

निकिताशा मजदूर : " निकालने की साजिश करते रहते हैं। सुनने में आ रहा है कि किसे रखना है और किसे नहीं यह तय करने के लिये इन्टरव्यु लेंगे। लीडरों को तो कम्पनी से फायदा होता है इसलिये लीडर लोग कम्पनी के गुण गाते हैं। लेबर विभाग तो बिल्कुल बेकार का विभाग है – इससे मजदूरों को कोई फायदा नहीं होता उल्टे नुकसान होता है। कहाँ जायें ? मजदूरों को मजदूरों पर यकीन नहीं रहा नहीं तो कुछ इलाज हो सकता था। फिलहाल अकेले-अकेले निपटना पड़ता है। सोचते हैं , दाँये-बाँये देखते भी हैं पर अभी कोई राह नजर नहीं आती।"

क्लच आटो वरकर : " नई सी.एन.सी. मशीनें आ रही हैं और लाइन सिस्टम शुरू कर रहे हैं। दो मिनट पहले हाथ धोते , छुट्टी होने से दो मिनट पहले कार्ड पँच करते , आपस में बातचीत करते जो मजदूर निगाह में आ जाते हैं उनके मैनेजमेन्ट पैसे काट लेती है।

" पहले ओवर टाइम के लालच में हम अपने निर्धारित जॉब और मशीन के अलावा काम कर देते थे। अब मैनेजमेन्ट ने नियम बना दिया है कि वरकर को किसी भी मशीन-जॉब पर लगा सकती है।

" पहले साहब लोग 'अपने आदमी हो' कह कर एक-दो से प्रोडक्शन बढवाते हैं। फिर हर मजदूर से कहते हैं कि तुम भी उतना ही उत्पादन दो।

" 2 टन से 1600 टन की हाइड्रोलिक प्रेसें हैं। ज्यादातर को कैजुअलों से चलवाते हैं। प्रेसों में हाथ बहुत कटते हैं। पहले तो हाथ कटने पर कुछ कैजुअलों को परमानेन्ट कर भी देते थे पर अब बिलकुल नहीं करते।

" हाथ कटों को फैक्ट्री से निकाल कर मैनेजमेन्ट हमारी आँखों पर पट्टी बाँधने की कोशिश करती है ताकि हम अपनी जिन्दगी के बारे में नहीं सोचें।"

मैनेजमेन्ट-यूनियन एग्रीमेन्ट पर एस्कोर्ट्स मजदूरों की कुछ प्रतिक्रियायें :

" कई दिन जनरल बॉडी मीटिंग की अफवाहें रही और आज 20 मई को सरक्युलर द्वारा प्रधान ने घोषणा कर दी कि 16 मार्च को जनरल बॉडी मीटिंग में सुनाई एग्रीमेन्ट ही लागू होगी। 16 मार्च की मीटिंग में मजदूरों ने एग्रीमेन्ट ठुकरा दी थी और प्रधान व महासचिव की पिटाई भी कर दी थी जिस पर वे इस्तीफे का नाटक कर चुके हैं।

" बड़ा धोखा हुआ। यह अन्याय है। यह अलोकतांत्रिक है। इतने बहुमत से जिताने के बाद भी ऐसा किया। कि फायदा हुआ ?

" हजारों कैजुअलों की नौकरियाँ खाने वाली एग्रीमेन्ट परमानेन्ट मजदूरों पर बहुत ज्यादा वर्क लोड बढाना तो लिये ही है, हजारों परमानेन्ट मजदूरों की नौकरियाँ भी खायेगी और पैसों का नुकसान ऊपर से है।

" कैजुअल वरकरों की मदद से ट्रैक्टर डिविजन में 105 ट्रैक्टर प्रतिदिन बनाने पर अब तक ओवर टाइम व इनसेन्टिव के 4500 रुपये बनते थे। एग्रीमेन्ट में कैजुअल हटा कर, ओवर टाइम खत्म करके, 2500+1690=4190 रुपये में 140 ट्रैक्टर प्रतिदिन बनाने की बात है। कोई भी मजदूर क्यों मानेगा ?

" मुख्य बात डराने की है। डर के मारे जो निकल जायेंगे वे निकल जायेंगे। कुछ आदमी हैं जो मैनेजमेन्ट का डर फैलाने वाला प्रोपगेण्डा कर रहे हैं। ऐसे लोग बहुत सक्रिय हैं। इन लोगों को मैनेजमेन्ट अलग से पैसे देती है।

" 1 जून को थर्ड प्लान्ट में असेम्बली लाइन पर एक-एक वरकर के सिर पर दो-दो मैनेजर खड़े रहे और बड़ी सँख्या में कैजुअलों को भी लगा कर दिन की शिफ्ट में 70 ट्रैक्टर बनवाये। मैनेजरों ने नारियल फोड़े और लड्डु बाँटे परन्तु परमानेन्ट मजदूर लाइन बन्द होने पर एक जगह जा कर बैठ गये और साहबों का प्रसाद लेने से साफ-साफ इनकार कर दिया।

" मैनेजमेन्ट इस-उस प्लान्ट में, इस-उस डिपार्टमेन्ट में ज्यादा प्रोडक्शन होने का बढा-चढा कर प्रचार तो कर ही रही है, झूठ-मूठ में उत्पादन बढने की बातें भी फैला रही है। **सिर पर खड़े हो कर कुछ जगह मैनेजमेन्ट कुछ दिन ज्यादा प्रोडक्शन ले भी लेगी तो क्या ? रुटीन में तो वरकर ही तय करेंगे।**

" 400 मोटरसाइकिल प्रतिदिन बन रही थी। एग्रीमेन्ट के बाद से 250 प्रतिदिन बनने लगी हैं।

" डर कर वरकर प्रोडक्शन निकालेंगे – ऐसा नहीं होगा। आठ घन्टे मशीन पर खड़े ही तो रखेंगे – खड़े रहेंगे। आई.ई. नोर्म्स के अनुसार सब काम करेंगे तो अब जितना प्रोडक्शन भी नहीं निकलेगा।

" थर्ड शिफ्ट की मैनेजमेन्ट धमकी क्यों दे रही है ? करनी है तो करे। पहले भी ऐसे किया था। नुकसान देख कर यह दो शिफ्ट पर लौटी। फिर करना है तो मैनेजमेन्ट कर ले।

" कुत्तों को भगाने के लिये फार्मट्रैक के गेट नम्बर दो पर मैनेजमेन्ट ने तीस हजार रुपये का कोई इन्सट्रुमेन्ट लगाया है लेकिन कुत्ते फिर भी घुस जाते हैं।

" अन्दर से हर मजदूर गुस्से में है। साहबों के सामने मुँह से नहीं बोलेंगे। चुपचाप काम में लगे रहेंगे। निगाह में नहीं आयेंगे। अपनी नौकरी तो बचानी ही है लेकिन जिन्दा भी रहना है इसलिये एग्रीमेन्ट को पँचर करना ही है। कुतर-कुतर कर साल-छह महीनों में हम एग्रीमेन्ट का हुलिया बिगाड़ देंगे।

" हम ने सोचा था कि एग्रीमेन्ट में हद से हद दुगना वर्क लोड़ बढेगा पर यह तो चार गुणा बढा रहे हैं। **मजदूरों को रोबोट बनाना चाहते हैं।**

" क्रैंक केस लाइन पर जहाँ एक मजदूर एक मशीन चलाता था वहाँ कह रहे हैं कि एक वरकर चार मशीन चलाये। 100 सी. सी. लाइन पर एक मजदूर को 6 मशीनें चलाने को बोल रहे हैं। असेम्बली लाइन में 200 मजदूर हैं और अब

(बाकी पेज दो पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

इनके नियम-कानून ....

- हफ्ते में एक छुट्टी के साथ हरियाणा में कम से कम वेतन 1902 रुपये महीना ।
- जहाँ 1000 से कम वरकर हैं वहाँ 7 तारीख से पहले और जहाँ 1000 से ज्यादा मजदूर हैं वहाँ 10 तारीख से पहले वेतन देना।
- ओवर टाइम की पेमेन्ट डबल रेट से। तीन महीने में किसी भी हालत में 50 घन्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं करवाना।

... और इनके अमल

इन्जेक्टो मजदूर : "कैजुअल वरकरों से एक फार्म पर जबरन दस्तखत करवा कर कैजुअलों को ठेकेदार के मजदूरों में बदल रहे हैं। कैजुअलों के तौर पर 1800 रुपये महीना देते थे और अब ठेकेदार के बना कर 1400 रुपये देते हैं। हर रोज जबरन ओवर टाइम के लिये रोकते हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं।"

जे. एम. ए. वरकर : "अप्रैल का वेतन मैनेजमेन्ट ने आज 13 मई तक नहीं दिया है।"

राज टैक्सटाइल्स मजदूर : "1400-1500 रुपये वेतन देते हैं। काम करते समय चोट लगने पर वरकर को खुद अपने पैसों से इलाज करवाना पड़ता है।"

आटोपिन वरकर : "तनखा दो महीने में एक बार देते हैं। जनवरी 99 में आये डी. ए. के 172 रुपये मार्च की तनखा में जोड़े थे पर फिर पे-स्लिप में से काट दिये और पैसे नहीं दिये। मैनेजमेन्ट ने लेबर डिपार्टमेन्ट में किये किसी समझौते का नोटिस लगाया है और कह रही है कि आगे भी डी. ए. नहीं देगी।"

श्री श्याम गत्ता फैक्ट्री मजदूर : "हैल्परों को 1200 रुपये तनखा देते हैं। रोज 4 घन्टे ओवर टाइम के लिये जबरन रोकते हैं।"

झालानी टूल्स वरकर : "मार्च 96 से 20 नवम्बर 97 तक के 20 महीने 20 दिन का वेतन मैनेजमेन्ट ने अब तक नहीं दिया है। काट-पीट कर अब जो तनखा दे रही है उसका भी कोई टाइम नहीं है। मार्च 99 का वेतन 16 मई को देना शुरू किया था और अप्रैल 99 की तनखा की तो अभी कोई बात ही नहीं है। काटे-पीटे वेतन में से भी मैनेजमेन्ट अपनी गुण्डागर्दी के लिये पैसे काट रही है। चन्दे के नाम की दस रुपये की पर्ची डाल कर मार्च 99 की तनखा में से 60 रुपये काट लिये।"

एस. जी. एल. मजदूर : "12/6 मथुरा रोड़ प्लान्ट में 1250 मजदूर हैं। वेतन के नाम पर 1650 रुपये देते हैं पर उसमें से 200 रुपये फन्ड और ई. एस. आई. के नाम पर काट लेते हैं।"

नेफा वरकर : "मार्च की आधी तनखा 10 मई तक नहीं दी है और उल्टे 2 मई से मैनेजमेन्ट ने मजदूरों की ले ऑफ लगानी शुरू की हुई है।"

अतुल ग्लास मजदूर : "अप्रैल का वेतन आज 13 मई तक नहीं दिया है। बीस साल से काम कर रहे लोग कैजुअल हैं – मैनेजमेन्ट परमानेन्ट नहीं करती।"

डी. एस. डीजल वरकर : "तनखा 25 तारीख से पहले नहीं देते।"

जयको स्टील फासनर मजदूर : "ठेकेदार के वरकरों को 1000 रुपये तनखा देते हैं। कैजुअल वरकरों के वेतन में से मैनेजमेन्ट का प्रोविडेन्ट फन्ड का हिस्सा भी काट लेते हैं।"

यूनिमैक्स वरकर : "तनखा 22 तारीख के बाद देते हैं।"

सुप्रीम इन्टरप्राइजेज मजदूर : "1200 से 1800 रुपये वेतन देते हैं और 10 तारीख के बाद ही देते हैं।"

ट्राइटोन इंजिनियरिंग वरकर : "सब कैजुअल वरकर हैं। फन्ड नहीं, पे-स्लिप नहीं, सादे रजिस्टर पर तनखा। मैनेजर गालियाँ देता है। ओवर टाइम सिंगल रेट से – रोटी के पैसे भी नहीं देते।"

नूकैम मजदूर : "तनखा का कोई टाइम नहीं है – 20-25-28 तारीख को देते हैं।"

बुजुर्ग सेक्युरिटी गार्ड : "1200 रुपये तनखा देते हैं पर वह भी टाइम पर नहीं। ठेकेदार का व्यवहार बहुत खराब है – मजबूरी में इस उमर में नौकरी कर रहा हूँ।" ■

'मजदूर समाचार' में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, मजदूर लाइब्रेरी में आराम से बैठ कर बतायें।

अपनी बातें अन्य मजदूरों तक पहुँचाने के लिये 'मजदूर समाचार' में भी छपवाइये। आपका नाम किसी को नहीं बतायेंगे और आपके कोई पैसे खर्च नहीं होंगे।

महीने में एक बार ही 'मजदूर समाचार' छाप पाते हैं और 5000 प्रतियाँ ही फ्री बाँट पाते हैं। किसी वजह से सड़क पर आपको नहीं मिले तो 10 तारीख के बाद मजदूर लाइब्रेरी आ कर ले सकते हैं – फुरसत में कुछ गपशप भी हो जायेगी।

★ Reflections on Marx's Critique of Political Economy

★ a ballad against work

★ Self Activity of Wage-Workers: Towards a Critique of Representation & Delegation

The books are free

एस्कोर्ट्स मजदूरों की बातें

(पेज एक का शेष)

कहते हैं कि एक शिफ्ट में 36 चाहियें। पी.पी.सी. में 32 की जगह 12 वरकर। मैगनेटिक कॉयल का काम बाहर भेज कर 18 महिला मजदूरों को पेन्ट शॉप व मशीन शॉप में भेज दिया है। पेन्ट शॉप नई बन रही है, कम्प्युटराइज्ड गनों से पेन्ट होगा – अब जो हैं उनकी एक चौथाई नौकरियाँ ही बचेंगी।

"प्लान्ट के अन्दर चार टाइम आफिस बना रहे हैं।

"कम्प्युटर पँच कार्ड के लिये फोटो खींच रहे हैं। हाजरी क्लर्कों को प्रोडक्शन लाइन पर लगायेंगे।

"एक कैमरा असेम्बली में और दो कैमरे मशीन शॉप में लगा दिये हैं।

"मेरे से बीस साल छोटा मैनेजर भी मुझे बेटा कहता है।

"दो मशीनें दो मजदूर चला कर 260 पीस बनाते थे। अब कह रहे हैं कि एक मजदूर दोनों मशीनें चलायें और 360 पीस बनाये।

"मशीन शॉप में 700 परमानेन्ट और 250-300 कैजुअल थे। कैजुअल सब हटा दिये हैं और 270 परमानेन्ट को शिफ्ट के दौरान बैठे रहने को कह रहे हैं।

"एक समय क्वालिटी पर बहुत कन्ट्रोल था लेकिन प्रोडक्शन बढाने और वेन्डरों से कट-कमीशन ने क्वालिटी की ऐसी-तैसी कर रखी है। 0.05 की टालरेन्स को 0.1 तक चलाने को कहते हैं जिससे यह 0.15 से 0.2 तक चली जाती है। **मैनेजर कहते हैं कि प्रोडक्शन निकालो, बाकी से तुम्हें कोई मतलब नहीं है।**

"जे. सी. बी. में क्वालिटी खराब है कह कर मैनेजमेन्ट ने मजदूरों के पैसे काटने शुरू कर दिये हैं। पैनल सिस्टम शुरू करके 8 आटो इलेक्ट्रिशियनों को मेन्टेनैन्स में ट्रान्सफर कर दिया है।

"मल्टी स्किल की बात तो करते ही हैं, मल्टी स्केल भी लागू कर रहे हैं। इन्सपैक्शन वालों को पेन्ट शॉप में तो भेजेंगे ही, आपरेटरों से हैल्परी भी करायेंगे।

"फार्मट्रैक में मैनेजमेन्ट ने अति-सूक्ष्म अक्षरों में एग्रीमेन्ट की कॉपी बाँटी है।

"कुछ लीडरों को तो देखो कह रहे हैं कि मजदूरों ने एग्रीमेन्ट का विरोध नहीं किया इसलिये उन्होंने दस्तखत किये।

"थर्ड प्लान्ट पर 29 मई को साइड मीटिंग में लीडर पूरी भाषा मैनेजमेन्ट की बोल रहा था और कह रहा था कि एक शिफ्ट में 70 ट्रैक्टर बनाओ।

"मैनेजमेन्ट को एग्रीमेन्ट लागू कर पाने में शँका है। मजदूर चुपचाप एग्रीमेन्ट की हवा निकालने के लिये कदम उठा रहे हैं। एग्रीमेन्ट के विरोध में प्लान्टों में पर्चे चिपके हैं।" ■

पुरानी सोच...

समस्याओं का समाधान करना लीडरों का काम है। यूनियनें ही कुछ दिला सकती हैं।

..... इस सोच के नतीजे

टेक्नो आटो कम्पोनेन्ट्स मजदूर : "सैक्टर 27 सी के प्लाट 21 में हम 85 वरकर थे। तनखा कम थी ; ठेकेदार के मजदूरों को थप्पड़ तक मार देते थे ; ओवर टाइम के लिये जबरदस्ती रोकते थे और पैसे सिंगल रेट से देते थे ; डी. ए. देते ही नहीं थे। इन परेशानियों से पार पाने के लिये यूनियन बनाई। 15.9.97 को मैनेजमेन्ट ने 63 मजदूरों को बाहर कर दिया। यूनियन लीडर बिक गये। तब हम ने दूसरी यूनियन का पल्लू पकड़ा। उस यूनियन ने पहली से भी ज्यादा कबाड़ा किया। परेशान हो कर अधिकांश मजदूरों ने हिसाब ले लिया है।"

जी. ई. मोटर्स वरकर : " हमारे यहाँ अप्रेन्टिसों में जो 3-4 लीडर बने थे उन्होंने खा - पी कर किनारा कर लिया और अप्रेन्टिसों को फँसा गये। अब तो हर जगह यही हो रहा है कि अगुआ बेच खाते हैं।"

कटलर हैमर मजदूर : "लीडरों के कहने पर 30 अप्रैल तक हम ने 12 परसैन्ट उत्पादन बढाया। मैनेजमेन्ट ने मात्र 400 रुपये और वह भी अलाउन्स में देने की बात की तो हम ने फिर पूर्व वाला उत्पादन देना आरम्भ कर दिया है। नये और पुराने लीडरों में कोई फर्क नहीं है – सब लीडर एक ही थैली के चट्टे-बट्टे होते हैं।"

टेकमसेंह वरकर : " हमारे साथ काम करता एक पहले कहता था कि मजदूरों की तनखा तो केवल कम्पनी के कचरे से ही निकल जाती है, बाकि सब मैनेजमेन्ट खाती है। वह यह भी कहता था कि लीडर ऐसा होना चाहिये कि भले ही उसकी नौकरी चली जाये पर उसे मजदूरों का बुरा नहीं करना चाहिये। हम सोचते थे कि उसके विचार बहुत अच्छे हैं और हम ने उसे लीडर बना दिया। अब देखो 31 परसैन्ट वर्क लोड बढाने वाली एग्रीमेन्ट करके वह हमारी कमर तोड़ रहा है और हमारी नौकरी भी खायेगा। लीडर कबाड़ा करते हैं। लीडर नहीं होते तो अच्छा था। पर फिर मजदूर करेंगे कैसे ?"

एस्कोर्ट्स मजदूर : " वरकर अजीब स्थिति में हैं। दो साल से कहे जा रहे थे कि एग्रीमेन्ट हो नहीं रही- हो नहीं रही और अब एग्रीमेन्ट हो गई है तो तनखा व नौकरी दोनों खतरे में पड़ गई हैं। एस्कोर्ट्स में भी लीडर वही कर रहे हैं जो फरीदाबाद में तमाम नेता कर रहे हैं – पूरी तरह मैनेजमेन्ट की भाषा बोल रहे हैं।"

पोलीमर पेपर वरकर : "यूनियन ने मार्च में डिमान्ड नोटिस दिया। मैनेजमेन्ट ने बिना कोई लैटर दिये 2-3 का गेट रोक दिया। लीडरों ने 6 अप्रैल को टूल डाउन करवाया – शाम को झगड़ा हुआ और पुलिस बुला ली गई। मैनेजमेन्ट ने 7 अप्रैल से सब मजदूरों का गेट रोक दिया। दो दिन बाद मैनेजमेन्ट ने कहा कि जो अन्दर आना चाहें वे शर्तों पर दस्तखत करके आयें। यूनियन ने मना कर दिया। सब वरकर गेट पर बैठे और लीडर भाग-दौड़ में लगे। धीरे-धीरे लोग अन्दर जाने लगे और आज 14 मई तक 30 अन्दर चले गये हैं। 4-5 हिसाब ले गये हैं। अब हम 55 बाहर हैं। मैनेजमेन्ट कहती है कि 20 को नहीं लेगी, बाकी चाहें तो ड्युटी करें। पिछले साल खुद लड़-झगड़ कर हम ने जो थोड़ा-सा लिया था वह भी गड्ढे में चला गया है।"

आटो इग्निशन मजदूर : " हर जगह कम्पनियाँ नेताओं के जरिये ही कामयाब हो रही हैं। मजदूरों में यूनियनों के प्रति विश्वास नहीं है पर कुछ लेने के चक्कर में इनके फन्दे में फँस जाते हैं।"

प्याली फैक्ट्री वरकर : "स्टाफ ने अपनी 5 महीनों की बकाया तनखा माँगी तब 2.1.98 को मैनेजमेन्ट ने हितकारी प्रोट्रीज और हितकारी चाइना, दोनों में ताला लगा दिया था। मैनेजमेन्ट-यूनियन वार्तायें कभी चण्डीगढ तो कभी यहाँ होने लगी। फैक्ट्री बन्द हुये साल से ऊपर हो गया तब खुलवाने के नाम पर लीडर लोग वरकरों के घर-घर गये और कोरे कागजों पर दो जगह दस्तखत करवाये। और फिर, लीडरों ने पोट्रीज के सब वरकरों की नौकरी खत्म करने वाली एग्रीमेन्ट की ! चाइना के मजदूरों का भी पीछे का सब हिसाब-किताब बराबर घोषित कर दिया। नोटिस में 10 फरवरी से चाइना खोल कर 15 अप्रैल तक सब वरकरों को ड्युटी पर लेने और 15 अप्रैल तक पोट्रीज के मजदूरों को हिसाब देने की बातें थी। लेकिन अब तक पोट्रीज वरकरों को पैसे नहीं दिये हैं और चाइना में भी छाँट-छाँट कर थोड़े-से मजदूरों को ड्युटी पर लिया है जो कि पुराने जैंग लगे माल को तेजाब से धोते हैं और स्टोर में इधर-उधर करते हैं। हम 1200 मजदूरों ने लीडरों को खूब चन्दा दिया और यह बदले में पाया।"

झालानी टूल्स मजदूर : "लीडर ही नहीं, झन्डे भी हम ने कई बदले यह सोच कर कि हमारी परेशानियाँ दूर करेंगे पर हुआ उल्टा। थक-हार कर हम ने जुलाई 97 में लीडरों से पिन्ड छुड़ा लिया लेकिन सरकार और मैनेजमेन्ट ने फिर लीडरों को हमारे सिर पर बैठा दिया। अपने उन लीडरों के जरिये मैनेजमेन्ट हमारे 40 करोड़ रुपये नहीं हड़प सकी तो जून 98 में मैनेजमेन्ट ने अपने दूसरे लीडरी गिरोह को कमान सौंपी। फैक्ट्री के अन्दर मजदूरों की पिटाई से ले कर कत्ल तक कर चुके अपने इन लीडरों से मैनेजमेन्ट ने अब अपने लिये कोर्ट केस भी करवा दिया है ताकि हमारी जिन्दगी-भर की कमाई हड़प सके।"

सेवा इन्टरनेशनल वरकर : "तनखा देर से देने और उसमें से पैसे काट लेने ; ओवर टाइम जबरन करवाने और दो महीने तक उसके पैसे नहीं देने ; बहुत ज्यादा काम का बोझ ; कइयों को पे-स्लिप और ई.एस.आई. कार्ड नहीं देने जैसी अपनी परेशानियाँ दूर करवाने के लिये हम एक यूनियन के पास गये। मैनेजमेन्ट ने 11 मई को 12/1 मथुरा रोड़ प्लान्ट के आधे मजदूरों (400-500) को बाहर निकाल दिया। बाहर किये वरकर गेट पर बैठे हैं और लीडर भाग-दौड़ कर रहे हैं।"

एवरी इन्डिया मजदूर : " घाटा हो रहा है कह कर मैनेजमेन्ट कैन्टीन बन्द करने की कह रही है। हम कैन्टीन वरकरों को 5 मई को नोटिस दिया है कि 31 मई हमारी नौकरी का अन्तिम दिन है। हमारे यहाँ यूनियन है। देखो लीडर क्या करते हैं ? वैसे मैनेजमेन्ट रिटायर होने वालों की जगह नई भर्ती नहीं करती – लगता है कि हर काम ठेकेदारों के तहत करवायेगी।"

मितासो वरकर : " मैनेजमेन्ट ने वी.आर. एस. लगाई। किसी का हिसाब नहीं लिया। मैनेजमेन्ट ने 12 मजदूरों को जबरन निकाल दिया। लीडर बोले कि हम कुछ नहीं कर सकते।"

बाटा मजदूर : " मैनेजमेन्ट ने 25 फरवरी को तालाबन्दी की तब प्रचार था कि फैक्ट्री जल्दी ही खुल जायेगी, मजदूर चिन्ता नहीं करें। लॉक आउट को तीन महीने होने को आये तब से प्रचार है कि तालाबन्दी लम्बी चलेगी, फैक्ट्री गोदाम भी बन सकती है। पहले वाला प्रचार मजदूरों को खुद कुछ करने से रोकने के लिये था और अब वाला प्रचार वरकरों को डरा कर 1990-94-98 की एग्रीमेन्टों की कड़वी धारायें मानने के लिये मजबूर करने के वास्ते है। झूठी आशायें और बढा-चढा कर भय दिखाना मैनेजमेन्टों की शर्तें थोपने तथा अपनी जकड़ बनाये रखने के लीडरी के तरीके हैं। यही हमारे यहाँ हो रहा है।"

नोरदर्न लेदर वरकर : "यूनियन ने 1996 के अन्त में डिमाण्ड नोटिस दिया। एग्रीमेन्ट नहीं कर रही कह कर लीडरों ने हड़ताल करवाई। मैनेजमेन्ट ने तालाबन्दी कर दी। चार महीने लॉक आउट के बाद मैनेजमेन्ट ने छाँट-छाँट

(बाकी पेज चार पर)

चित भी इनकी , पट भी इनकी

इनवेल ट्रान्समिशन मजदूर : " चार अंग्रेजों ने आ कर फैक्ट्री में फिल्म बनाई। मैनेजमेन्ट के आदेशानुसार हम इन चार रोज पूरे 8 घन्टे अपनी-अपनी मशीन पर लगे रहे। इस दौरान हम ने थोड़ा-सा भी आराम नहीं किया।

" फिल्म बनाने वालों ने कहा कि मजदूर ऐसे काम करते हैं जैसे स्लो डाउन कर रखा हो। मैनेजमेन्ट कहती है कि वरकर काम कम करते हैं।"

ॐ मैनेजमेन्ट स्वाहा !

एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक मजदूर : " हमारे डिपार्ट में तीन महीने से बी.पी.आर. लागू कर रखा है। एक वरकर से दो मशीनें चलवाते हैं और सैल्फ सैटिंग व सैल्फ इन्सपैक्शन भी करवाते हैं। ऊपर से रोज सुबह मैनेजमेन्ट हम से प्रार्थना करवाती है। ॐ....ॐ....ॐ.... करते समय हम सोचते रहते हैं :

ऊपर वाले
तू तो मन की बात जानता है।
ऊपर वाले
हमारे मन की मुराद पूरी कर।
ऊपर वाले
तू कहीं है तो
मैनेजमेन्ट का नाश कर !
ॐ....ॐ.... मैनेजमेन्ट स्वाहा ! !"

काम कम इसलिये कि 15 मिनट काम द्वारा हम अपनी दिहाड़ी के बराबर उत्पादन कर देते हैं। पन्द्रह मिनट काम करने के बाद हम जितना काम करते हैं वह शोषणतन्त्र और दमनतन्त्र के रखरखाव तथा विस्तार के लिये इस्तेमाल होता है। कम काम द्वारा हम शोषण व दमन पर लगाम लगाते हैं।

बातें ज्यादा इसलिये कि अपने अनुभवों व विचारों का आदान-प्रदान अधिक से अधिक कर सकें। ऐसा करके हम शोषण व दमन तन्त्रों की ईंट-गारा को हटा सकेंगे , इस व्यवस्था के नट-बोल्ट खोल सकेंगे और विकल्प को साकार कर सकेंगे।

" काम कम" वर्तमान पर ब्रेक का काम करता है और " बातें ज्यादा" विकल्प-आलटरनेटिव की बुनियाद बनाना है।

डाक पता :

मजदूर लाईब्रेरी
आटोपिन झुग्गी
एन.आई.टी. फरीदाबाद—121001

ठेकेदार ऐसे भी

" पहले मैं एक ठेकेदार के नीचे काम करता था। उसने छोड़ा तो मैनेजमेन्ट ने मुझे ठेकेदार बनने को कहा। मुझे आधे रेट पर ठेका दिया पर मैंने विरोध नहीं किया क्योंकि मुझे अपने पैसे दुगने होते दिखे। मैंने अपने भाइयों व भतीजों को ही काम पर लगा दिया। आज मुझे 3000 तब बचते हैं जब मैं उन्हें 1400 देता हूँ। वे मुझे ठेकेदार होने के नाते पैसे बढाने का कहते हैं पर जब मैं मैनेजमेन्ट से बात करता हूँ तो वह कहती है कि इससे कम रेट पर ठेकेदार मिल जायेंगे। जब मैं अपने आदमियों के पैसे बढाने की मजबूरी बताता हूँ तब मैनेजमेन्ट कहती है कि इन्हें हटा दो, 800-900 में बहुत वरकर मिल जायेंगे। मेरे जैसे कुशल मजदूर उसी फैक्ट्री में 4000 रुपये ले रहे हैं पर मैं ठेकेदार हूँ!"

पुरानी सोच के नतीजे...

(पेज तीन का शेष)

कर अन्दर लेना शुरू किया। 175 परमानेन्ट में से 40 को ही अन्दर लिया, 135 को निकाल दिया है। कैजुअल 150 भर्ती कर लिये हैं।"

साहनी सिल्क मजदूर : " सीवर लाइन के पैसे नहीं जमा कराये। 4-5 महीने पहले नगर निगम ने लाइन बन्द कर दी। भयंकर बदबू है और बीमारी का खतरा। बैंक कर्ज जमा नहीं करने पर नीलामी का एक नोटिस तो वरकरों ने रोका है और दूसरे की तारीख 4 जून है। हमारे प्रोविडेन्ट फन्ड के पैसे मैनेजमेन्ट 2 साल से जमा नहीं करवा रही। हम ने यूनियन बदली पर कोई फर्क नहीं पड़ा। यूनियन वालों को तो बस नोट चाहियें।"

स्टाफ मेम्बर : " स्टाफ मजदूरों से काम लेता है। मैनेजमेन्ट की पकड़ स्टाफ के माध्यम से है। लेकिन स्टाफ क्या करे ? सारी बात तो यूनियन के नेता ही बिगाड़ रहे हैं। इन्हें ही कम्पनी आगे करके, पैसा खिला कर एग्रीमेन्ट करती है। एग्रीमेन्ट के बाद सब मजदूर तो पछताते हैं ही, स्टाफ की भी रेल बन जाती है। जितना डर स्टाफ को मैनेजमेन्ट से लगता है उतना ही यूनियन से लगता है क्योंकि यह लोग मैनेजमेन्ट की जेब में होते हैं।" ■

विकल्पों के लिये प्रश्न (4)

तीव्र से तीव्रतर आफत की ओर

गति-रफ्तार-स्पीड वर्तमान का एक मूल सूत्र तो है ही, यह वर्तमान का एक मर्मस्थल भी है। तीव्र से तीव्रतर को बेहतर जीवन का मूल मन्त्र प्रस्तुत करना कम होने लगा है लेकिन बचे रहने , बने रहने की अनिवार्यता-नियति के तौर पर इसका रोना बढने लगा है।

अनन्त गति की मृगमरीचिका ने कार्यस्थलों पर नौकरी व तन-मन की अनन्त असुरक्षा को तो जन्म दिया ही है, तीव्र से तीव्रतर होती रफ्तार ने सड़कों के रूप में ऐसी कत्लगाहें रची हैं कि अंग-भंग व मौत किसी भी क्षण हो सकते हैं।

गति के अनुरूप शरीरों को ढालने में अनुशासन के कोड़े जहाँ तक ले जा सकते थे वह सीमा कभी की पार हो चुकी है। तीव्र से तीव्रतर होती रफ्तार के मुताबिक शरीरों को चलाने के लिये दवाइयों का इस्तेमाल भी अब हाथ खड़े कर रहा है। कम्प्युटरों , कम्प्युटराइज्ड मशीनों, इलेक्ट्रोनिक्स की स्पीड के अनुरूप शरीरों में परिवर्तन के लिये वैज्ञानिक अन्धी लगन से रिसर्च में जुटे हैं।

तीव्र से तीव्रतर होती जा रही गति जीवन में तत्काल अति-आनन्द की हवस पैदा कर जीवन को ही दाँव पर लगा रही है।

गति, अधिक गति, और अधिक गति की दौड़ ने धूल, धुँआ, गैस, फाइबर, पाउडर, कीटाणु, केमिकल, तेजाब, बिजली, आग की भट्टियाँ, चुम्बकीय, विद्युत, एटमी किरणों के जानलेवा स्थलों के रूप में फैक्ट्रियों को तो पैदा किया ही है, स्पीड-दर-स्पीड सम्पूर्ण सँसार को फैक्ट्रियों के हाल में पहुँचा कर पृथ्वी पर जीवन को ही खतरा उत्पन्न कर रही है।

गति-रफ्तार-स्पीड पर लगाम की बात तो है ही , इसके विकल्प पर विचार करना और भी आवश्यक है। (जारी)

रफ्तार
जानलेवा है

आटोपिन मजदूर : 20 मई को रात सवा दस बजे फैक्ट्री में एक और वरकर की मृत्यु हो गई। बीस साल की सर्विस वाले हीरा लाल कम्प्रेसर के भारी दबाव से कमानी कितना लोड ले सकती है यह चैक कर रहे थे कि गुटका स्लिप कर गया। सेफ्टी गार्ड नहीं था। हीरा लाल जी की छाती और सिर फट गये।

" आटोपिन मैनेजमेन्ट ने चटपट कागजी खानापूर्ति कर मजदूर की मौत को रफा-दफा कर दिया। जीप में बर्फ की सिल्लियों पर लाश रख तथा हीरा लाल जी की पत्नी व बच्चों और भाई को साथ बैठा कर मैनेजमेन्ट ने 750 किलोमीटर दूर प्रतापगढ जिले में उनके गाँव भेज दिया।

"बहुत ज्यादा काम का बोझ, सुरक्षा के प्रबन्ध नहीं करने और गुण्डागर्दी की वजह से आटोपिन फैक्ट्री में हर साल-छह महीने 'एक्सीडेन्ट' में किसी-न-किसी मजदूर की मौत हो जाती है।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।